ब्रह्मपुत्र नदी पर चीन द्वारा निर्मित नवीन बाँध

चर्चा में क्यों?

हाल ही में चीनी अधिकारियों ने एक चीनी पनविद्युत कंपनी को ब्रह्मपुत्र नदी (जो तिब्बत में यारलुंग ज़ान्गबो के नाम से जानी जाती है) के निम्न-प्रवाह में प्रथम ‘अनुप्रवाह पनविद्युत परियोजना’ (Downstream Hydropower Project) के निर्माण की अनुमति दी है।

//

प्रमुख बिंदु:

- **ब्रह्मपुत्र:**
  - इसे उत्पत्ति स्थल पर सियांग या दिहांग के नाम से जाना जाता है, जिसका उद्गम मानसरोवर झील के पास कैलाश पर्वत के चेमायुंगडुंग (Chemayungdung) ग्लेशियर से है। यह अरुणाचल प्रदेश के सदिया शहर के पश्चिम में भारत में प्रवेश करती है।
  - **सहायक नदियाँ:**
  - इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ दिबांग, लोहित, सियांग, बूढ़ी दिहिंग, तीस्ता और धनसरी हैं।
  - यह एक बारहमासी नदी है, जो अपने भूगोल और विशिष्ट जलवायु परिस्थितियों के कारण अनेक विलक्षण विशेषताओं से युक्त है।
  - इसमें वर्ष में दो बार बाढ़ की स्थिति रहती है। पहली, गर्मियों में हिमालयी हिम के पिघलने के कारण और दूसरी मानसून के प्रवाह के कारण उत्पन्न होती है।
    - हाल ही में इन बाढ़ों की आवृत्ति बढ़ गई है। जलवायु परिवर्तन तथा उच्च एवं निम्न प्रवाह के प्रभाव के कारण इन बाढ़ों की विनाशकता बढ़ गई है।
    - यह भारत और बांग्लादेश के निचले राज्यों में जनसंख्या और खाद्य सुरक्षा के दृष्टिकोण से चिंता का विषय है।
  - नदी की गतिशील भूस्खलन और भूगर्भीय गतिविधियों के कारण प्राय: नदी मार्ग में परिवर्तन देखने को मिलता है।

परियोजना के बारे में:

- चीनी राज्य के स्वामित्व वाली पनविद्युत कंपनी 'पॉवरचाइना' (POWERCHINA) द्वारा नवीन 'पंचवर्षीय योजना' (अवधि 2021-2025) के हिस्से के रूप में यारलुंग ज़ान्गबो नदी के अनुप्रवाह में पनविद्युत के दोहन के लिये 'तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र' (Tibet Autonomous Region- TAR) सरकार के साथ एक रणनीतिक सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किये गए हैं।
  - यह पहली बार होगा जब नदी के अनुप्रवाह क्षेत्र का दोहन किया जाएगा। हालाँकि नियोजित परियोजना के स्थान का कहीं भी उल्लेख नहीं

है।

- ब्रह्मपुत्र नदी का 'महान अक्षसंघीय वलन' (ग्रेट बेंड) और मेडोग काउंटी में यारलुंग ज़ान्गबो नदी पर स्थति 'ग्रैंड कैनयिन' क्षेत्र- जहाँ नदी का बहाव बहुत तेज़ है तथा यह अरुणाचल प्रदेश में भारतीय सीमा में प्रवेश करती है, इस परयिोजना के लयि संभावति स्थान हो सकता है।
  - इस 50 कमिी. लंबाई के अकेले खंड में 70 'मलियिन कलिोवाट घंटे' (Kwh) की पनवदि्युत वकिसति करने की क्षमता है।

चीन की पूर्ववर्ती परयिोजनाएँ:

- वर्ष 2015 में चीन द्वारा तबि्बत के ज़ान्गमु (Zangmu) में अपनी पहली पनवदि्युत परयिोजना का संचालन कयिा गया था, जबकि डागू (Dagu), जएिक्सु (Jiexu) और जयिाचा (Jiacha) में तीन अन्य बाँध नरि्मति कयि जा रहे हैं, जो नदी के ऊपरी और मध्य प्रवाह में हैं।

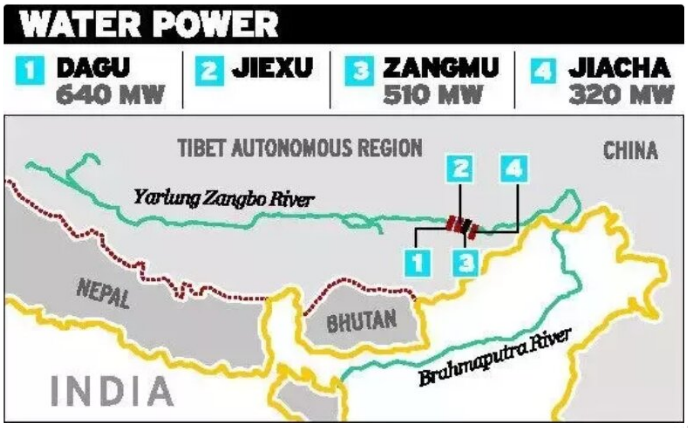

चीन के लयि परयिोजना का महत्त्व:

- 60 मलियिन kWh पनवदि्युत के दोहन से प्रतविर्ष 300 बलियिन kWh स्वच्छ, नवीकरणीय और शून्य-कार्बन उत्सर्जन युक्त वदि्युत प्रदान की जा सकती है।
- परयिोजना वर्ष 2030 से पहले 'कार्बन उत्सर्जन' के शखिर पर पहुँचने और वर्ष 2060 तक कार्बन तटस्थता (शुद्ध कार्बन उत्सर्जन शून्य) की स्थति प्राप्त करने के चीन के लक्ष्य को पूरा करने में महत्त्वपूर्ण भूमकिा नभिाएगी।

भारत के लयि चतिा का वषिय:

- भारत वर्ष 2015 से- जब चीन ने ज़ान्गमु पर अपनी परयिोजना का संचालन शुरू कयिा था, पर चतिा व्यक्त कर रहा है।
- अगर ग्रेट बेंड में एक बाँध के नरि्माण को मंज़ूरी दे दी जाती है, तो इसके स्थान को लेकर (जो नदी के अनुप्रवाह और अरुणाचल प्रदेश की सीमा पर स्थति होगा) भारत द्वारा नई चतिाओं को उठाया जाएगा।
  - इस परयिोजना में भारत के लयि जल की मात्रा एक मुद्दा नहीं है क्योंकि ये बाँध 'रन-ऑफ-द-रविर' प्रकार के हैं और ब्रह्मपुत्र के प्रवाह को प्रभावति नहीं करेंगे।
  - इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि ब्रह्मपुत्र पूरी तरह से ऊपरी-प्रवाह (Upstream) पर नरि्भर नहीं है। इसके बेसनि का अनुमानति 35% हसि्सा भारत में है।
- हालाँकि भारत, चीनी गतविधियों के कारण प्रभावति होने वाली जल की गुणवत्ता, पारस्थितिकि संतुलन और बाढ़ प्रबंधन को लेकर चतिति है।
- भारत और चीन के बीच कोई जल साझाकरण समझौता नहीं हैं, दोनों देश हाइड्रोलॉजकिल डेटा साझा करते हैं। इसलयि वास्तवकि डेटा साझा करना और सूखे, बाढ़ तथा भारी मात्रा में जल के नरि्वहन की चेतावनी जैसे मुद्दों पर नरिंतर संवाद करना महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

आगे की राह:

- भारत को हाइड्रोलॉजकिल डेटा के आदान-प्रदान से आगे बढ़कर चीन से पूरे बेसनि की स्थलाकृतकि स्थति के बारे में जानकारी के आदान-प्रदान की मांग करनी चाहयि।
- ब्रह्मपुत्र बेसनि में जल सुरक्षा सुनश्चिति करने वाले कसिी भी कदम के लयि दोनों देशों के बीच दीर्घकालकि समझ की आवश्यकता होगी। भारत के लयि चीन को नरिंतर वार्ता में शामलि करना एवं जल-साझाकरण संधि को अपनाना दोनों देशों के हतिों की रक्षा के दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

स्रोत: द हदिू

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/china-s-new-dam-on-brahmaputra